www.livehindustan.com
हिन्दुस्तान
कानपुर, शनिवार, 14 मई 2022 04

प्राकृतिक खेती का हब होगा बुंदेलखंड : शाही

- सीएसए विवि में जैविक खेती पर सेमिनार में बोले कृषि मंत्री
- जैविक खेती में उत्पादन देने वाली प्रजाति को करें विकसित

कानपुर, वरिष्ठ संवाददाता। प्रदेश के कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने कहा कि बुंदेलखंड को प्राकृतिक खेती का हब बनाएंगे। इसके लिए किसानों को प्रेरित किया जाएगा और सभी कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके) में एक एकड़ में जैविक खेती का मॉडल विकसित करेंगे। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक जैविक खेती में अधिक उत्पादन देने वाली प्रजाति को विकसित करें, जिससे किसान आकर्षित हों। तकनीक की जरूरत हो तो आईआईटी जैसे संस्थानों से मदद लें। उन्होंने कहा कि यूक्रेन युद्ध की वजह से आर्थिक स्थिति गंभीर हो रही है, जिसका असर पड़ना तय है। हालांकि भारत कई देशों की मदद कर रहा है।

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) के कैलाश भवन में दो दिवसीय एलुमनी मीट व प्राकृतिक खेती पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। शुभारंभ कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही, कुलपति डॉ. डीआर सिंह, एसोसिएशन के अध्यक्ष एसके सिंह ने किया।

कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने उत्कृष्ट कार्य करने वाले किसानों को सम्मानित किया

कुलपति डॉ. डीआर सिंह ने विवि की उपलब्धियों के बारे में जानकारी दी। कहा कि विवि के वैज्ञानिक तीन सौ से अधिक प्रजातियां विकसित कर चुके हैं। कार्यक्रम में शोध पत्र प्रस्तुत किए गए और पुस्तक का विमोचन भी हुआ। संचालन डॉ. श्वेता यादव व डॉ. नौशाद खान ने किया। पूर्व छात्र डॉ. आरसी चौधरी, डॉ. वाईएस शिवाय, डॉ. मसूद अली, डॉ. धर्मराज सिंह, डॉ. एचजी प्रकाश, डॉ. डीपी सिंह, डॉ. राम बटुक सिंह, डॉ. खलील खान आदि मौजूद रहे।

भागलपुर स्थित बिहार कृषि विश्वविद्यालय सबौर के कुलपति प्रो. अरुण कुमार ने कहा कि गंगा किनारे कॉरिडोर विकसित करना जरूरी है। बिहार में यह कॉरिडोर विकसित कर विवि किसानों को जागरूक कर रहा है। लोक सेवा आयोग के पूर्व सदस्य व पूर्व कुलपति डॉ. भारत सिंह ने किसानों को धीरे-धीरे जैविक खेती अपनाने की सलाह दी।

कानपुर जागरण कानपुर, 15 मई, 2022 दैनिक जागरण 9

प्राकृतिक खेती में लागत शून्य, फसलों की पैदावार होती भरपूर

जासं, कानपुर : चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे व अंतिम दिन विशेषज्ञों ने शोधपत्रों और किसानों ने अनुभवों से प्राकृतिक खेती के फायदे समझाए। श्रेष्ठ कृषक पुरस्कार से सम्मानित हो चुके झांसी के अंबाबाय गांव के किसान व भाजपा किसान मोर्चा के प्रदेश उपाध्यक्ष श्याम बिहारी गुप्ता ने विशेषज्ञों को बताया कि प्राकृतिक खेती में लागत शून्य है और फसलों की भरपूर पैदावार होती है। भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान झांसी के निदेशक डा. अमरेश चंद्र, डा. श्वेता, डा. मनोज कटियार आदि ने शोधपत्र प्रस्तुत किए।

श्याम बिहारी गुप्ता ने बताया कि वह ढाई एकड़ खेत में वर्ष 2006 से प्राकृतिक खेती कर रहे हैं। ऊसर भूमि को भी उपजाऊ बनाकर वह विभिन्न फसलें चक्र के हिसाब से लगाते हैं। पहले एक गाय थी, अब 30 हैं। डा. अमरेश चंद्र ने विवि के पुराने दिनों की याद ताजा की। किसानों को प्राकृतिक खेती के लिए प्रोत्साहित करने की बात कही। वर्ष 1982 बैच के पूर्व छात्र व कृषि विभाग के संयुक्त निदेशक उर्वरक अनिल कुमार पाठक, बांदा कृषि विवि स्थित मृदा विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डा. जगन्नाथ पाठक ने पुरानी कक्षाओं एवं छात्रावास के दिनों को याद कर अपने अनुभव बताए। वर्ष 1984 बैच के डा. अभिमन्यु ने भी स्मृतियों से गुदगुदाया। कुछ विज्ञानी अपने पुराने क्लासरूम व हास्टल में भी गए। एल्युमिनाई एसोसिएशन के अध्यक्ष डा. एसके सिंह, कार्यक्रम आयोजक डा. मनीष गंगवार ने सभी संस्थाओं का आभार जताया।

सीएसए में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान (आइजीएफआरआई) झांसी के निदेशक डा. अमरेश चंद्र (मध्य में) ने कृषि के बारे में जानकारी दी। प्रो. एचसी सिंह (दाएं) व डा. धरम राज सिंह (बाएं) मौजूद रहे • जागरण

श्याम बिहारी गुप्ता, झांसी • जागरण

- सीएसए विवि में राष्ट्रीय संगोष्ठी में श्रेष्ठ कृषक पुरस्कार से सम्मानित झांसी के किसान ने दी जानकारी
- विशेषज्ञों ने मोटे अनाज पर प्रस्तुत किए शोधपत्र, साथ में बैठकर विवि के पुराने दिनों की यादें ताजा कीं

केमिकल युक्त फसलों से हो रहीं बीमारियां

पार्टिसिपेटरी रूरल डेवलपमेंट फाउंडेशन गोरखपुर के चेयरमैन डा. रामचेत चौधरी ने रसायनों का इस्तेमाल रोकने की अपील की। उन्होंने कहा कि फसलों में रसायनिक उर्वरकों व कीटनाशकों के प्रयोग से कैंसर, मधुमेह, दिल व किडनी से भी जुड़ी बीमारियां हो रही हैं।

डा. रामचेत चौधरी • जागरण

मधुमेह के रोगी खाएं काला नमक चावल

डा. रामचेत ने बताया कि वह 10 वर्ष तक संयुक्त राष्ट्र संघ में विज्ञानी रहे और कई पुरस्कार पाए। वर्ष 2006 में सेवानिवृत्ति के बाद गोरखपुर लौटकर 11 जिलों में काला नमक चावल की चार प्रजातियां केएन-तीन, बौना 101, बौना 102 व किरण विकसित कीं। इस चावल की किरण प्रजाति 145 दिन में होती है। शुगर फ्री होने के कारण मधुमेह से पीड़ित व्यक्ति भी खा सकता है। इन प्रजातियों को प्राकृतिक विधि से तैयार कराया जा रहा है।

शुरुआती वर्ष में औसत उत्पादन, इसके बाद फायदा

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आइएआरआइ) नई दिल्ली के प्रधान विज्ञानी डा. वाइएस शिवाय ने बताया कि किसान अपनी भूमि के 20 फीसद हिस्से में प्राकृतिक खेती करें तो उन्हें फायदा दिखेगा। शुरुआत के दो वर्ष में फसलों में औसत पैदावार होती है, लेकिन इसके बाद तेजी से लाभ होता है। इतना फायदा केमिकल व रसायनिक उर्वरकों से भी नहीं होता है। लाभ देखकर किसान अपने पूरे खेत पर प्राकृतिक खेती कर सकते हैं।

डा. वाइएस शिवाय • जागरण

---

4 दैनिक जागरण कानपुर, 14 मई, 2022 **कानपुर जागरण**

पौष्टिक व गुणवत्ता वाला खाद्यान्न तैयार करें किसान

सीएसए विवि में राष्ट्रीय संगोष्ठी में कृषि मंत्री ने की अपील

जासं, कानपुर : पिछली सदी में खाद्यान्न का संकट था, लेकिन कृषि विश्वविद्यालयों में विकसित तकनीक व हरित क्रांति से देश समृद्ध हुआ। यूक्रेन व रूस के बीच युद्ध के दौरान हम कई देशों को आपूर्ति दे रहे हैं, जो गौरव की बात है। अब किसान प्राकृतिक खेती को बढ़ाकर पौष्टिक व गुणवत्ता वाला खाद्यान्न तैयार करें, क्योंकि फसलों में केमिकल के प्रयोग से बीमारियां हो रही हैं। यह अपील प्रदेश के कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसएविवि) में आठवीं एल्युमिनाइ मीट और दो दिवसीय प्राकृतिक खेती पर राष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान की। साथ ही प्राकृतिक खेती कर रहे सात किसानों को सम्मानित किया।

कृषि मंत्री ने कहा, सीएसए विश्वविद्यालय देश के प्राचीनतम विश्वविद्यालयों में शामिल है। 115 वर्षों में विवि अपनी आठवीं एल्युमिनाइ मीट कर रहा है। अब प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने का वक्त है। रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से भूमि की जलधारण क्षमता व पोषक तत्वों में कमी हो रही है। प्राकृतिक व गो आधारित खेती एकमात्र समाधान है। सभी कृषि विज्ञान केंद्र एक एकड़ में प्राकृतिक खेती कराएं और किसानों को प्रशिक्षित करें। इससे उनकी आय व रोजगार बढ़ेगा। कुलपति डा. डीआर सिंह ने कहा, दो दिन की संगोष्ठी में प्राकृतिक खेती पर जो सुझाव आएंगे, उसे सरकार को भेजेंगे। विश्वविद्यालय ने दो वर्ष पहले प्राकृतिक खेती शुरू कराई थी। इससे एक हजार से ज्यादा किसान लाभान्वित हो रहे हैं। उनकी आय दो से तीन गुणा बढ़ी है। विश्वविद्यालय फसलों की 300 से अधिक प्रजातियां विकसित कर चुका है। एल्युमिनाइ एसोसिएशन के चेयरमैन डा. एसके सिंह ने बताया, संगठन से 1100 से ज्यादा पूर्व छात्र जुड़े हैं। वि इस दौरान कार्यक्रम संयोजक डा. मुनीष, डा. करम हुसैन, डा. धर्मराज सिंह, डा. श्वेता यादव, पूर्व छात्र डा. आरसी चौधरी, डा. वाईएस शिवाय, डा. भारत सिंह आदि रहे।

सीएसए में कार्यशाला का कृषि मंत्री सूर्य प्रताप सिंह शाही (बाएं से दूसरे) ने शुभारंभ किया। साथ में कुलपति डा. डीआर सिंह (बाएं से तीसरे), निदेशक शोध डा. करम हुसैन (बाएं), पूर्व छात्र संगठन के चेयरमैन डा. एसके सिंह (दाएं से तीसरे), डा. मुनीश गंगवार (दाएं) व डा. धरम राज सिंह (दाएं से दूसरे) • जागरण

कृषि विश्वविद्यालयों से कृषि महाविद्यालयों की संबद्धता पर जल्द होगा निर्णय: कृषि मंत्री ने बताया, कृषि कोर्स करा रहे महाविद्यालयों को कृषि विश्वविद्यालयों से संबद्ध कराने की तैयारी है। प्रस्ताव पर जल्द फैसला हो सकता है। उन्होंने कुलपति से विवि में शिक्षकों व शिक्षणेत्तर कर्मचारियों के रिक्त पदों पर जल्द नियुक्तियां करने के लिए कहा। उन्होंने बताया, झांसी एफपीओ (किसान उत्पादक संगठन) को प्राकृतिक खेती के रूप में चलाएंगे। बुंदेलखंड में क्लस्टर बनाकर प्राकृतिक खेती का हब तैयार करेंगे। कुलपति ने बताया, विश्वविद्यालय से संबद्ध कृषि विज्ञान केंद्र मैनपुरी में मूंगफली, इटावा में टमाटर, फतेहपुर में बकरी पालन और अलीगढ़ में सरसों व मधुमक्खी पालन का उत्कृष्टता केंद्र बनाया गया है।

नीति आयोग ने किताब में लिखी फर्रुखाबाद के हिमांशु की कहानी

प्राकृतिक खेती में योगदान के लिए कृषि मंत्री ने हिमांशु के साथ छह किसानों को किया सम्मानित

जासं, कानपुर : प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों के सम्मान में भारत सरकार के नीति आयोग ने देश भर के 100 किसानों की कहानी को एक किताब में प्रकाशित कराया है। इसमें फर्रुखाबाद कायमगंज रोड स्थित कुइयांधीर गांव के हिमांशु गंगवार की भी कहानी लिखी है। हिमांशु की इस उपलब्धि पर शुक्रवार को सीएसए विवि में कृषि मंत्री ने उन्हें और छह अन्य किसानों को सम्मानित किया।

हिमांशु ने बताया कि उन्होंने नागपुर स्थित आरईसी से मैकेनिकल इंजीनियरिंग में बीटेक किया था। वर्ष 2009 में महाराष्ट्र के सुभाष पालेकर से मुलाकात हुई। इसके बाद उनकी बताई विधि से प्राकृतिक खेती कर रहे हैं। देशी गाय के गोबर, गौमूत्र से जीवामृत, घन जीवामृत तैयार करके खेत में डालते हैं और दलहनी फसलें, आलू आदि उगाते हैं। 25 अप्रैल को नीति आयोग में किताब के विमोचन अवसर पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी और तेलंगाना के जी जगनरेड्डी भी मौजूद थे।

फतेहपुर के औंग निवासी किसान शैलेंद्र सिंह के बेटे आनंद सिंह, हसनपुर के रमेश सिंह, सगुनापुर के वीरेंद्र यादव, इटावा के नवली गांव के शिवम तिवारी, रायबरेली के कचनावा गांव के आनंद मिश्रा, अलीगढ़ के मानपुर निवासी यादराम को भी पुरस्कार मिला।

आनंद सिंह ने बताया कि वह वर्मी कंपोस्ट बनाकर और ढैंचा की खाद डालकर खेत तैयार करते हैं। फंगस के लिए ट्राइकोडर्मा सीएसए विवि से लेकर आते हैं और गुड़ व 200 लीटर पानी में डालकर स्प्रे कराते हैं। एक बीघे में करीब डेढ़ सौ कुंतल जैविक गन्ना उगा रहे हैं। सिंचाई ड्रिप विधि से करते हैं। हाल ही में ताइवानी अमरूद लगाया है। वीरेंद्र ने बताया कि वह भी प्राकृतिक खेती से गेहूं, धान, मोटे अनाज में रागी, केमोमाइल, तुलसी, लेमन ग्रास उगाते हैं। शिवम टिशू कल्चर विधि से आलू के बीज उगाते हैं।

---

kanpur.amarujala.com
कानपुर • शनिवार • 14.05.2022 06
अमर उजाला

आलू पर आला काम

बीटेक करने के बाद आलू शोध में मन रमा, इटावा में बनाई टिश्यू कल्चर लैब

21 साल के शिवम आलू से हर साल कमा रहे एक करोड़

खास खबर

दिव्यांश सिंह

कानपुर। बीटेक करने के बाद इटावा के नावली गांव के 21 वर्षीय शिवम कुमार तिवारी का मन इंजीनियरिंग के बजाय खेती-किसानी की तरफ लग गया। आलू की उन्नत किस्म के बीजों का उत्पादन कर वे साल में करीब एक करोड़ रुपये तक कमा रहे हैं। उनके बीजों से किसानों की कमाई भी बढ़ रही है।

शिवम ने कृषि विश्वविद्यालय (सीएसए) के इटावा स्थित इंजीनियरिंग कॉलेज से मैकेनिकल इंजीनियरिंग से 2019 में बीटेक किया। फिर कहीं नौकरी करने के बजाय उन्होंने 30 एकड़ पर इस एग्री स्टार्टअप की शुरुआत की। अब शिवम 200 एकड़ में आलू बीजों का उत्पादन कर रहे हैं। वह टिश्यू कल्चर लैब में आलू की 17 तरह की प्रजातियों के उन्नत किस्म के बीज तैयार करके किसानों को बेच रहे हैं। शुक्रवार को सीएसए में कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने इस अनूठी उपलब्धि पर शिवम को सम्मानित किया।

किसान शिवम तिवारी को पुरस्कृत करते कृषि शिक्षा मंत्री सूर्य प्रताप शाही व सीएसए के कुलपति प्रो. डीआर सिंह। संवाद

200 एकड़ में कर रहे आलू के उन्नत बीजों का उत्पादन

शिवम ने बताया कि बीटेक की पढ़ाई के दौरान 2017 में सेंट्रल पोटैटो रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीपीआरआई) मेरठ में प्रशिक्षण के लिए भेजा गया था। वहां आलू के बीजों की उत्पादन इकाई के कामकाज को देखा तो खेती-किसानी में ही कुछ नया करने की सोची। प्रशिक्षण के बाद इटावा लौटकर किसान पिता राम करन तिवारी से बीज उत्पादन पर बात की। फिर 50 लाख का लोन लेकर टिश्यू कल्चर लैब बनाई। उन्होंने कहा कि इस काम में हर साल 40 लाख खर्च होते हैं और कुल आय 1.40 करोड़ की होती है। (संवाद)

चिप्स का प्लांट लगाने की तैयारी

शिवम ने बताया कि अब इटावा में आलू के चिप्स का प्लांट लगाने की तैयारी है। इस प्लांट में किसानों से बाजार के मूल्य से ज्यादा दाम पर आलू खरीदकर उसके चिप्स बनाकर बाजार में उतारेंगे।

टिश्यू कल्चर लैब से ये होते लाभ

टिश्यू कल्चर लैब से विकसित होने वाले पौधे या बीजों में रोग नहीं लगता। यहां के बीज या पौधे के विकसित होने की संभावना 95 प्रतिशत तक होती है। इस कारण किसान इनकी ज्यादा मांग करते हैं।

ऐसे बनता है आलू का बीज

शिवम ने बताया कि मार्च में सीपीआरआई मेरठ से पांच हजार रुपये कीमत के आलू की अलग-अलग प्रजाति के माइक्रो प्लांट लाते हैं। लैब में एक पौधे से पांच पौधे बनाते हैं। उसके बाद उन पांच पौधों को शीशी में लगाकर उनसे कई पौधे बनाए जाते हैं। एक माइक्रो प्लांट से 50 हजार पौधे बना सकते हैं। अक्तूबर में पौधों को ग्रीन नेट हाउस में और 10 दिन बाद व्हाइट ग्रीन हाउस में लगाया जाता है। फरवरी में पौधों से कंद (बीज) निकलने लगते हैं, जिसकी बिक्री की जाती है। फिलहाल कुफरी बहार, कुफरी संगम, सुखियारी और फ्राई होम समेत 17 प्रजातियों के बीजों का उत्पादन किया जा रहा है।

Conference in Print Media